'इच्छा' को बनायें इच्छाशक्ति

हमारी इच्छा वो हो जिसमें अच्छाई हो। यही तो समझ है। ज्ञान क्या है? जिसमें अच्छे और बुरे के अन्तर की समझ हो। यह जानकारी हो कि किसमें हमारा कल्याण है और किसमें हमारा अकल्याण है। जब हमें समझ मिलती है या ज्ञान मिलता है तो उसका पहला परिणाम ये हो कि हमारी जो हानिकारक इच्छायें थीं, वे समाप्त होनी चाहिए और हमारी इच्छाओं में लोक-कल्याण हो, सबका भला हो।

हम स्वयं को परमात्मा को समर्पण किसलिए करते हैं? लोक-कल्याण के लिए। यह हमारी इच्छा है। यह इच्छा मेरे लिए नहीं, लोक-कल्याण अर्थ। हवन करते हैं ना, किसलिए करते हैं? सारा मंत्र पढ़कर क्या करते हैं? यह अग्नि के लिए है, यह वायु के लिए है, यह आकाश के लिए है, मेरे लिए नहीं।

- ब्र.कु. गंगाधर

उसका भाव क्या है? घी को अग्नि में डालेंगे। अग्नि में डालेंगे तो सूक्ष्म हो जायेगा। सूक्ष्म होकर सारे वातावरण में मिल जायेगा। हमारे में दूसरों का भला करने की, दूसरों का कल्याण करने की भावना आयेगी। खायेंगे तो हम थोड़े लोग खायेंगे लेकिन वातावरण में मिल जाये तो सबको थोड़ा-थोड़ा मिल जायेगा। क्योंकि इसके पीछे त्याग भावना थी।

सब सुखी कैसे होंगे? हम भी समर्पण करते हैं लेकिन उसका भाव यही होता है कि हमारी जो शक्ति है, हमारा जो समय है, हमारी जो सम्पत्ति है, हमारा जो भी है, वह स्व-इच्छा के लिए नहीं, स्वार्थ के लिए नहीं, सब के लिए है।

कोई भी सत्संग होगा, तो क्या कहते हैं? सर्वे भवन्तु सुखिना.... सब सुखी हों। ऐसे ही हमारे कहने से सब सुखी हो जायेंगे क्या? अगर हमारे कहने से विश्व में सब सुखी हो जायेंगे तो इतने सब कार्यक्रम आदि करने की क्या ज़रूरत है, ऐसे ही हो जायेंगे। लेकिन ऐसा नहीं है। मनुष्य कर्मों से गिरे हैं और कर्मों से चढ़ेंगे। दु:ख और अशान्ति किससे मिलती है? बुरे कर्मों से। सुख और शान्ति कैसे मिलेगी? अच्छे कर्मों से। कर्म कैसे किये जाते हैं? संकल्प से। संकल्प कैसे ठीक होंगे? संस्कार को ठीक करने से और इच्छा को ठीक करने से। परमात्मा ने हमें एक बात बतायी है, स्व-परिवर्तन का नियम। संसार में आज तक यह बात किसी ने भी नहीं कही है। यह बात ''स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन'' एक क्रान्तिकारी नियम है। संसार में पहली बार यह बात परमात्मा द्वारा ही कही गयी है। ईश्वरीय ज्ञान ऐसा है कि इसकी तुलना या उपमा किसी भी दर्शनशास्त्र से नहीं हो सकती।

विश्व में परिवर्तन कैसे आयेगा? सब कहते हैं कि विश्व में परिवर्तन आना चाहिए, शान्ति होनी चाहिए। कैसे परिवर्तन आयेगा? क्या छू मंत्र से या किसी जादू से? कितना बड़ा विश्व है! बाप, बेटे एक दूसरे की बात नहीं मानते, पति पत्नी एक दूसरे की बात नहीं मानते। ऐसी स्थिति में संसार कैसे बदलेगा? ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय कहता है कि संसार बदल जायेगा। कलियुग चला जायेगा और सतयुग आ जायेगा। क्या कलियुग ऐसे ही चला जायेगा? अंग्रेज भारत छोड़कर नहीं जा रहे थे, उनको भगाना पड़ा, वो ऐसे ही चले गये क्या? तरीका अपनाना पड़ेगा। उसके लिए परमात्मा ने क्या तरीका बताया है? स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन। परमात्मा का यह तरीका अति तार्किक है, कोई भी उसकी आलोचना नहीं कर सकता, उसको काट नहीं सकता, इसे अकाट्य प्रमाण कहते हैं!

संसार का एक सबसे बड़ा मौलिक नियम है ''कारण और परिणाम''। बिना कारण कोई परिणाम नहीं होगा। डॉक्टरी भी यही कहती है। अगर आप डॉक्टर के पास जाकर कहोगे कि मेरे पेट में दर्द है तो डॉक्टर पूछेगा कि क्या खाया था? ज़रूरत से ज़्यादा खा लिया होगा इसलिए पेट ख़राब हो गया। कोइ न कोई कारण ज़रूर है, तब तो यह परिणाम निकला। उसी प्रकार, संसार में दु:ख और अशान्ति है तो उसके कारण क्या हैं? दु:ख और अशान्ति तो परिणाम हैं ना, फल हैं ना! इनका बीज क्या है? उनका कारण क्या है? परमात्मा हमें समझाते हैं कि उनका कारण है, मनुष्य के बुरे कर्म। जब तक कर्म नहीं बदलेगा, तब तक परिवर्तन नहीं होगा।

विकर्मों पर जीत पाने से हम बनते कर्मातीत

भट्ठी माना योग अग्नि। भट्ठी माना अंदर ही अंदर अपने आपको सच्चा बनाने के लिए गलाना। जब तक सोने को गलाया नहीं जाता है तो सच्चाई पैदा नहीं होती है। पहले जब गलूँ तब सच्चाई का सोना बनूँ। आज का सोना कोई काम का नहीं है। सतयुग में सोना नया निकलेगा। तो अभी हमारे में सच्चाई ऐसी हो जो झूठ का नाम-निशान न रहे। नैचुरल रीयल सच्चा वेल्युबुल बनना है तो कैरेक्टर को सुधारना है। अगर मेरे लाइफ में सच्चाई नहीं है तो मेरी लाइफ क्या है? निश्चय में विजय है। सच्चाई क्या है? सफल हुआ पड़ा है, सिर्फ हमको हाँ जी कहना है।

बाबा कोई कर्मों का दण्ड नहीं देता है, लोग समझते हैं बाबा जानता है ना। वो इसलिए नहीं जानता है कि तुम खराब कर्म करो, वह तुमको सज़ा दे। नहीं। तुम थोड़ा भी गलत कर्म करते हो तो तुम ही अपने को सज़ा देते हो। तो बाबा अपने आपको कैसे फ्री कर देता है। कहता है मैं सज़ा नहीं देता हूँ। सभी अपने आपको सज़ा देते हैं, इसलिए कर्म पर बहुत ध्यान रखना है। ऐसे नहीं, बाबा हमको यह पता नहीं था। तो ऐसे अच्छे कर्म करें जो मेरे को देख सब अच्छा करें। मन्सा वृत्ति से, भावना से, वाचा बोल से, कर्म सम्बन्ध से सुख शान्ति की प्राप्ति होती है तो लगता है कि हम कौन हैं, किसके हैं, कहाँ रहते हैं, क्या करते हैं। हमारा बाबा अव्यक्त हो करके सेवा कर रह ा है। तो अव्यक्ति स्थिति क्या है? व्यर्थ भाव या भान से परे यह वर्सा बाबा से ले लो। बाबा और वर्सा, बाप और वर्सा, उस घड़ी ऐसा कोई अनुभव करता है ना, तो लगता है कितने भाग्यवान हैं। उस घड़ी भी कोई साधारण बात करता है ना, ठीक है परंतु रियलाइज़ होता है, मैं साधारणता में नहीं आऊँ। यह वरदानी समय है। मेरा बाबा महादानी है, वरदानी है। अभी हर एक दिल से बोले मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा।

किसी ने मुझसे पूछा कि क्या निशानी है विकर्माजीत की? कोई विकल्प नहीं आयेगा, कोई व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा। विकर्माजीत वो बनेगा जिसको कर्मातीत बनने की लगन होगी। अब हम सबको कर्मातीत बनकर सम्पूर्ण बनना है ना। कोई इतनी भी कमी न हो। जैसा मेरा बाबा सम्पूर्ण है, यहाँ साकार में होते हुए पुरूषार्थ करता हुआ देखा, विकर्माजीत, कर्मातीत, सम्पूर्ण बनता हुआ देखा। भले बाबा है, सारी ज़िम्मेवारी बाबा के ऊपर है। भण्डारे में नमक है कि नहीं, बच्चों को कपड़ा है या नहीं, बाबा की ज़िम्मेवारी है, परंतु पुरुषार्थ में विकर्माजीत, कर्मातीत, सम्पूर्ण, फिर अव्यक्त फिर फरिश्ता। अब हरेक अपने आपको देखे। विकर्माजीत बनने से कर्मातीत भी बनते हैं और ऑटोमेटिक कर्म श्रेष्ठ होता है। कर्म छूटता नहीं है, कर्मों को श्रेष्ठ बनाने से सतयुगी प्रालब्ध बनेगी। कर्मातीत विकर्माजीत, सम्पूर्ण, अव्यक्त, फरिश्ता, यह भान ऐसा आता है, जो अहंकार मरा, अभिमान गया पर चलते-फिरते, खाते-पीते देह का भान न रहे तो विदेह, मुक्त।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

एकांतप्रिय रहो, भले बहुतों के बीच रहते हैं पर एकांत है मेरे लिए, कहेंगे टाइम नहीं है, लेकिन बहुत टाइम है। एक के अन्त में जाने की जो हॉबी है वो एकांतप्रिय, अंतर्मुखी, एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाती है। फिर एकानामी से चलना, एकनामी, एक के नाम से हमारा सारा काम पूरा हो गया। एकानामी भी हुई, एकांतप्रिय भी हुए, एकाग्रता भी आ गई, तो कभी चलायमान या डोलायमान नहीं होते, अचल-अडोल रहते, यह है हमारा राजयोग। जो राजाओं का राजा बनाने वाला बाबा राजयोग सिखा रहा है।

डबल सेवा, अर्थात् कर्म के साथ शुद्ध वायब्रेशन्स भी

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

अशरीरी बनना अर्थात् शरीर से गुम हो जाना, शरीर का भान ही नहीं रहे, उसके लिए थोड़ा अभ्यास और चाहिए जो एकदम हम बैठें और अशरीरी हो जायें। अभी सेवा का विस्तार है, इसलिए विस्तार में थोड़ा टाइम लगता है, लेकिन अंत में तो सेकण्ड की बात होगी। उस समय अगर हम अभ्यास करेंगे कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ... यह तो जैसे योद्धे हो गये, फिर सूर्यवंशी कैसे बनेंगे, इसीलिए अभ्यास तो अभी से ही करना है।

शुरू में बाबा भी अमृतवेले के योग के बाद पाण्डव भवन के आंगन में पहाड़ी थी, उस पर खड़े होकर योग कराते थे, बाबा की दृष्टि ऐसी पड़ती जो हम सब अशरीरी हो जाते थे। कुछ भी सुधबुध नहीं होती थी, एकदम अशरीरी अवस्था में बाबा भी लाइट हाउस और हम भी जैसे लाइट हाउस बनके खड़े हैं। तो यही प्रैक्टिस अन्त में काम आयेगी। बिना अशरीरी बनने के अभ्यास के हम पास कैसे होंगे, तो अन्त के सरकमस्टांस अनुसार, हालातों के अनुसार अशरीरी बनने का अभ्यास बहुत-बहुत ज़रूरी है। अंत में अगर हम बाबा से मदद मांगेंगे तो फिर बाबा क्या करेगा! उस समय बाबा-बाबा कहने से क्या होगा! अगर बाबा के सामने फरियादी बन करके गये, तो यह फरियाद करना योग तो है ही नहीं। इसीलिए हम समझते हैं कि यह जो भट्ठियाँ हो रही हैं यह बहुत ज़रूरी हैं, किसी को भी मिस नहीं करनी चाहिए। भट्ठी में नैचुरल बाबा का बल एक्स्ट्रा होता है क्योंकि प्रोग्राम बाबा ही देता है। लेकिन हम यह अभ्यास लगातार करते चलें। हमने देखा है प्रोग्राम प्रमाण मदद मिलती है, वह प्रोग्राम ही एक लिफ्ट होता है, जिससे सहज प्राप्ति होती है वह ठीक है, लेकिन जब तक अपने मन का उमंग नहीं आया है, तो अविनाशी नहीं रहेगा। मन में एकदम लग जावे। कोई भी बात देखो दु:ख की भी दिल में लग जाती है या खुशी की दिल में लग जाती है, तो वह मिटना बहुत मुश्किल है, कितना प्रयत्न करते हैं। कोई का कोई शरीर छोड़ता है, अगर उसके दिल में लग जाता है, तो वह भूलना बहुत मुश्किल होता है। दु:ख का जो रूप होता वह उस समय दिखाई देता है। एक बारी बाबा ने बहुत अच्छी बात सुनाई थी, बाबा ने कहा - बच्चे समझते हैं हम सेवा बहुत अच्छी करते हैं, ज़िम्मेवारियाँ हैं ना, ज़िम्मेवारियाँ निभा रहे हैं, वह भी तो देखना है। तो बाबा ने कहा यह क्या बड़ी बात है, अज्ञानी भी तो बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियाँ चलाते हैं, हज़ारों लोगों को कंट्रोल करते हैं। वह भी तो अपनी ज़िम्मेवारियाँ निभाते हैं, अगर आप ज्ञानियों ने अपनी ड्युटी अच्छी तरह से निभाई तो क्या बड़ी बात है। हमारे में और उन्हों यही अन्तर है कि हम डबल काम करते हैं, हमारा आध्यात्मिक वायब्रेशन भी वायुमण्डल में फैलता है, और दूसरा, कर्म का भी बल मिलता है। हमारी डबल सेवा है, हमारी नवीनता यह है। और वह नवीनता अगर हमारे में नहीं है तो दुनिया वाले भी बहुत रेसपॉन्सिबिलिटी सम्भालते हैं। दुनिया चल तो रही है ना। कोई तो अच्छे होंगे, भले मैजॉरिटी उल्टे हैं, लेकिन कोई तो अच्छे होंगे ना, जिससे चल रहा है। तो बाबा ने यही कहा कि यह नहीं समझो हमारे पास बहुत काम है, ड्युटी निभानी है। उसी में ही बुद्धि जाती है। इसमें नई बात क्या है? दुनिया वाले सारा सम्भाल रहे हैं, आप भी सम्भाल रहे हैं, क्या बड़ी बात है? लेकिन बड़ी बात है डबल कमाई करने की। हमको बाबा की मदद है, उन बिचारों को बाबा की मदद तो नहीं है ना। फिर भी काम तो करते हैं, ड्युटी तो सम्भालते हैं ना! ड्युटी सम्भालनी है, एक्यूरेट करनी है, वह तो होना ही है, क्योंकि आपको डबल शक्ति है। बाबा की गुप्त मदद से ही सारी कारोबार चल रही है, बाबा बुद्धिवानों की बुद्धि टच करके निमित्त बनाता है। है तो बाबा की कमाल। हम लोगों का भाग्य बीच में बन जाता है। बाबा खुश होके हमें दे देता है, खुद तो लेने वाला है ही नहीं ना, इसलिए हमको फल दे देता है और मेहनत खुद करता है। तो हमको बाबा की मदद एक्स्ट्रा है। तो हमारा एक्स्ट्रा कुछ होना चाहिए ना। साधारण थोड़ेही होना चाहिए!

बाबा हम सबको कहते हैं बच्चे अचानक कुछ भी हो सकता है, इसलिए समय अनुसार सभी एवररेडी रहो। कोई भी सीन पूछके तो नहीं आयेगी। किसकी भी डेट फिक्स नहीं है। ज्योतिषी भले बताते होंगे, बाकी बाबा ने तो बताई नहीं है। न समय की डेट बताई है, न हरेक को अपनी डेट का पता है, किसको पता है क्या? हमारी टिकट इस समय कटने वाली है, यह किसीको पता है?